ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

युग प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

महाराज का परमात्मदेव में परम विश्वास था। वे ईश्वर तत्त्व पर पूरा भरोसा रखते थे। उसी जगदीश की शांत शरण में रहते हुए वे विपत्ति–वज्रपात में भी नहीं घबराते थे। सब सम्प्रदाओं की, सब मत–मतान्तरों की, सारे पन्थाई गुरुओं की और सकल मठधारियों की निधड़कपन से, तीव्र समालोचना करते थे। उनको सताने के लिए मताभिमानियों ने खड्ग उठाये, विष तक दिया, परन्तु वे निडर जंगलों में पड़े रहते, एकाकी घूमते। सहस्त्रों विरोधियों में अकेले खड़े गर्जते। उनका यह बल केवल भुवन–भावन ही के भरोसे पर था।

आर्यावर्त्तीय सम्प्रदायों को, आर्यों के प्राचीन तत्त्व को दूसरों की दृष्टि में घटाने वाले समझते थे; उनका निश्चय था कि नवीन मतों ने, महन्तों ने और मठों ने पुरातनकाल की महत्ता पर मिट्टी डाल दी है। उसकी विशुद्धता को मिश्रित कर दिया है। जब तक मतों को मिटाया न जाय, आर्यों में परम धर्म का होना कठिन है।

महाराज सार्वजनिक हित के लिए ही हाथ में तर्क का तीर लेकर खण्डन के भूखण्ड में उतरे थे। रोगी के फोड़े–फुन्सियों का जब तक छेदन न किया जाय, उसका स्वस्थ होना दुष्कर है। खेत में से जब तक झाड़–झंखाड़ उखाड़ कर, घास–फूस निकाल कर उसका शोधन न किया जाय, उसमें खेती का सुफलित होना असम्भव है। ऐसे ही किसी देश और जाति में से जब तक कुरीतियों को दूर न किया जाय और उसके आचार–विचार का संशोधन न हो, तब तक उसका उन्नति के उत्तम सोपान पर पदार्पण करना महाकठिन है। सुधार का काम सर्वप्रिय तो नहीं, परन्तु सार्वजनिक हित से पूर्ण अवश्य हुआ करता है।

–श्रीमद्दयानन्द–प्रकाश

हमारे पूर्वज

उनके अलौकिक दर्शनों से दूर होता ताप था,
अति पुण्य मिलता था तथा मिटता हृदय का ताप था।
उपदेश उनके शान्तिकारक थे निवारक शोक के,
सब लोक उनका भक्त था, वे थे हितैषी लोक के।

–गुप्त जी

यह अंक आर्य समाज कुल्लू के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा आगामी अंक आर्य समाज नादौन एवं नगरोटा बगवां के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ६९वां विक्रमी सम्वत् २०७० सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११४ जुलाई २०१३

आर्य समाज के अधिकारी एवं अभिभावक मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुये।

मुख्य अतिथि से पारितोषक प्राप्त करती छात्रा प्रबन्धक एवं मुख्याध्यापिका साथ खड़े हैं।

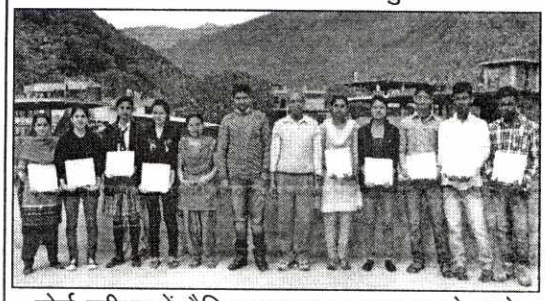

बोर्ड़ परीक्षा में मैरिट प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाले दसवीं के विद्यार्थी कक्षा अध्यापकों के साथ।

बड़ी संख्या में अभिभावकों की उपस्थिति।

विद्यालय छात्रायें सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई।

साभार

(अज्ञात) गुप्त दान द्वारा ₹ ११०० की राशि, श्री जगदीश चन्द आर्य, गांव रसूही, डा. बरवाड़ा, तह. देहरा जिला कांगड़ा (हि० प्र०) द्वारा ₹ १०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मो. : 94180-12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र0, मो. : 94180-71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 01733.220060
परामर्शदाता	: रत्न लाल वैद्य, उप-प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मो. : 94184-60332
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), आर्य समाज-कण्डाघाट मो. : 94180-20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी) मो. : 94182-79900
मुख्य प्रबन्ध-सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, सुन्दर नगर मो. : 94181-54988
प्रबन्ध-सम्पादक	: 1. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मो. : 94591-05378 2. मोहन सिंह आर्य, गांव चुरढ़, तह. सुन्दरनगर मो. : 98161-25501
सह-सम्पादक	: राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला
कोषाध्यक्ष	: मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.)
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, उपकार्यालय मण्डी से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

मानव का जीवन अति महत्वपूर्ण है। जीवन में भली प्रकार से जीने के लिये तथा अपने आचार विचार,आहार विहार, को सुन्दर बनाकर सुखानुभूति होती है। दुःख और अन्धकार के बादल छिटक जाते हैं। वेद में ओ३म् प्रतिष्ठ कहकर मानव मात्र को ओ३म् प्रभु के अमृत घूँट पीते रहने की शिक्षा और दीक्षा दी गई है। हमारे आचरण से कुछ ऐसा प्रतीत हो कि हमने पृथ्वी पर आकर उस पर परम देव की इस सुन्दर, सरल और संजीव फुलवाड़ी से श्रेष्ठ सद्कर्मों के पुष्पों को चुनकर अपनी झोली को भरकर मानव योनी में आकर इसे वास्तविक रूप में सार्थक और समस्त किया है। मेरे–तेरे की रात–दिन रट्ट लगाकर हमने अपने सांसों के अनमोल खजाने को यूं ही नष्ट कर दिया है। मानव जीवन अनमोल है। इसके सम्बन्ध में संत कबीर दास कहते हैं :

मानस जन्म अमोल है, होई न बारम्बार
जिमि बन फल पाके भूई गिरहीं न लागहिं डार।

जैसे पका हुआ फल वृक्ष से गिरकर पुनः वृक्ष पर नहीं लगता वैसे ही सांसों के तारों के टूटने पर शरीर शव बनकर रह जाता है। तब शास्त्रानुसार उसे भूत जगत में शामिल कर दिया जाता है अतः जब तक सांस है तब तक हमें वेदानुकुल मार्ग पर चलकर जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। वेद प्रभु का आदेश है कि हे मानव तू सौ वर्षों तक कार्य करता हुआ जीने की इच्छा रख, शरीर को बीमारियों का घर बनाकर दूसरों का सहारा बनने के स्थान पर स्वयं दूसरों पर बोझ बनना ठीक नहीं। यदि हमारे पूर्व कर्मानुसार ऐसा हो भी जाता है तब भी हमें उस परम पिता से पुनः सभी ताप–संताप कष्टों को सहने की शक्ति मांगनी चाहिए। ओ३म् प्रभु के निरंतर जाप से हमारे ताप और संताप दूर होने लगते हैं। हमें उस परम धन की प्राप्ति हो जाती है। जिसके लिए योगी, ऋषि–मुनि रात–दिन प्रयत्नरत्त रहते हैं। शायद तभी कबीर दास जी ने कहा,

"राम पदार्थ पाय के कबीरा गांठ
न खोल नहिं पटणूँ नहीं,
पारखू नहीं, ग्राहक नहीं मोल।"

इस अनमोल रत्न का कोई इस भौतिकवाद में न ग्राहक है और न ही भली भान्ति खरीद करने वाला। एक बार महात्मा कुम्भन दास भारत सम्राट अकबर महान् से मिलने के उपरांत वापिस जाने लगे तो अकबर सम्राट ने हीरे मातियों की भरी थाल जब कवि कुंभनदास को देनी चाही तो उस फकीर ने उसे लेने से इन्कार कर दिया। पुनः बादशाह का आग्रह करने पर भी हीरे, जवाहरात से भरी थाली को हाथ तक लगाने से इन्कार कर केवल यही कहा बस आप मेरे रास्ते से हट जाओ। यह कहता हुआ वह फकीर अपना कमंडल लेकर जंगल को चला गया। बस यह बह बात है कि जिसको कुछ भी नहीं चाहिए वही सम्राटों का सम्राट है।

चाह गई चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह,
जिसको कछु भी न चाहिए वही शहंनशाह।

हमारे सुन्दरनगर के कर्ण माने जाने वाले स्वर्गीय श्री ललित सेन जी एवं उनकी धर्मपत्नी स्वर्गीया श्रीमती कृष्णा सेन जी ने अपनी कमाई का लगभग सब कुछ महाराजा लक्ष्मण सेन जी की स्मृति में कॉलेज का निर्माण करके एक अद्भुत उपहार सुन्दरनगर की जनता को दिया। भात–रोटी खाकर अब यहां के युवक–युवतियां इस महाविद्यालय से उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। रानी कृष्णा सेन तथा उनके बड़े देवर कंबर कमला सेन जी ने अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धाश्रम के निर्माण हेतु करोडों रूपये की भूमि दान दे दी। कंवर कमला सेन जी ने तो चार लाख रूपये की नकद राशि भवन निर्माण हेतु दान देकर अत्यंत पुनीत कार्य करके अपने स्वर्गीय बड़े भाई राजा ललित सेन जी की दानवीरता की परम्परा को जीवित रखा। अनाथालय के निर्माण का सुन्दरनगर में स्वप्न सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता पं. मनोहर लाल शर्मा जी ने लिया। उनके साथ लाला विशनदास पूर्व कान्सोलेडिट निदेशक हिमाचल प्रदेश तथा चिकित्सा जगत के मण्डी के सुप्रसिद्ध सी. एम. ओ. डॉ. के. पांडिया की भागीदारी रही। इस वर्ष २६ मई को वृद्धाश्रम के चुनाव हुए जिसमें श्री पदम् गुलेरिया जी सर्व सम्मति से इस आश्रम के प्रधान निर्वाचित हुए। इससे पूर्व श्री बी. बी. कौशल, श्री बी. आर. शर्मा पूर्व जनरल मैनेजर, श्री रूप चन्द शर्मा आदि विभूतियां बड़ी कुशलता से इस पद पर कार्य कर चुकी हैं तथा आश्रम की ख्याति को चार चांद लगाए हैं। मैं स्वर्गीय राजा ललित सेन के अनुज कंवर कमला सिंह जी की नम्रता भरी वाणी का कायल हूं। वे अपने आप को सभी की उपस्थिति में डी. डी. सी. डी. अर्थात् दासों के दास चरण दास बताते हैं। सचमुच ही ऐसे उच्च विचार इस परिवार की ख्याति को चार चांद

लगाते हैं। कंवर कमला सिंह जी ने एक शेयर चुनाव वाले दिन पढ़कर सुनाया जो इन की गाथा की कहानी स्वयं कहता है। कंवर कमला सिंह जी ने अपने हाथ से लिखकर मुझे दिया। जो इस प्रकार से है :

यह सच है कि हम अपना सब कुछ खो बैठे,
लेकिन दिल की दौलत के आगे
दुनियां के खजाने कुछ भी नहीं।
याद तो वो रह जाते हैं
जो अपनी खुदी को हैं राख बनाकर
अपना रास्ता रोशन कर गये
याद वह नहीं रहता जो हम लेकर चले जाते हैं
याद तो वो रहता है जो हम देकर चले जाते हैं।

कंबर कमला सिंह जी के अपने परिवार के सम्बन्ध में व्यक्त किये विचार बहुत ही स्टीक, मर्म स्पर्शी और प्रेरणाप्रद हैं।

—कृष्ण चन्द आर्य

'आर्य आदर्श उच्च विद्यालय कुल्लू'

रिपोर्ट :—वर्ष २०१२

विद्यालय का वार्षिकोत्सव ७ दिसम्बर, २०१२ को मनाया गया। मुख्य अतिथि श्रीमती विमला मल्होत्रा जी थीं। वह ग्रामीण बैंक से सेवा निवृत वरिष्ठ प्रबन्धक हैं और भुन्तर के अन्तिम छोर में इन का बड़ा सुन्दर आवास है। यह आर्य समाज परिवार से सम्बन्ध रखती हैं तथा उदार और दानी हैं। इन्हों ने विद्यालय भवन के लिये एक लाख की राशी दान में दी है। इस अवसर पर स्कूल विद्यार्थियों ने बड़ा सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वार्षिक परीक्षा खेलों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विशिष्टता दिखाने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये गये। स्कूल परिणाम हर वर्ष की भान्ति शतप्रतिशत रहा। कुल ३३ विद्यार्थियों में २८ प्रथम श्रेणी में आये जिन में ११ विद्यार्थियों ने हिमाचल शिक्षा बोर्ड से मैरिट प्रमाण पत्र प्राप्त किये। चार विद्यार्थियों को हिमाचल सरकार द्वारा लैपटाप प्रदान किये गये। दो विद्यार्थियों को छात्रवृतियाँ प्रदान की गई। इस वर्ष दिव्य हिमाचल द्वारा आयोजित नृत्य प्रतियोगिता में ₹ ११००१ की नगद राशी प्राप्त की। रविन्द्र नाथ टैगोर की १५०वीं जयन्ति पर हिमाचल भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर ₹ ५०० की राशि तथा विजय उपहार प्राप्त किये। विद्यालय में श्री मेला राम ट्रस्ट की ओर से एक वाटर कूलर लगाया गया है। विद्यालय में आर्य समाज के सभी उत्सव मनाये जाते हैं। अपनी संस्कृति तथा देश भक्ति को बढ़ावा देने के लिये यज्ञ संध्या प्राणायाम, योगासन आदि निरन्तर कराये जाते हैं। न्यूनतम शिक्षा शुल्क और उत्तम शिक्षा का ध्येय लिये हुये विद्यालय निरन्तर प्रगति कर रहा है।

—प्रबन्धक,
आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू

'वार्षिक उत्सव आर्य समाज कुल्लू'

♦सत्यपाल भटनागर, महामन्त्री आ.प्र.स. (हि० प्र०)

आर्य समाज कुल्लू का वार्षिक उत्सव ७ जून से ६ जून २०१३ को बड़ी धूम—धाम से नये भवन में मनाया गया। उत्सव का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा का कार्य श्री रामफल सिंह अध्यक्ष आर्यवीर दल ने निभाया। प्रतिदिन नये यजमान बनते रहे। पूर्ण आहुति ६ जून २०१३ को हुई। यज्ञ के पश्चात् ऋषि लंगर हुआ जिस में आर्य आदर्श विद्यालय के विद्यार्थियों तथा अध्यापिकाओं ने सेवा कार्य निभाया। प्रतिदिन दो से चार बजे तक विद्यार्थियों और अभिभावकों के लिये कार्यक्रम होता रहा जिस में आर्य आदर्श विद्यालय कुल्लू एवं आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के सभी विद्यार्थी तथा अध्यापक भाग लेते रहे। कुछ अभिभावकों ने भी इस अवसर पर अपनी उपस्थिति से सभामण्डप को सुशोभित किया। उपदेशक तथा भजनोपदेशक मण्डल में स्वामी सदानन्द महाराज, अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर, श्री सतीश सुमन तथा संदीप आर्य थे। स्वामी जी के प्रवचनों ने श्रोताओं को बांध कर रखा। उन के प्रवचनों के विषय प्रतिदिन बड़े रोचक होते थे जिन्हें सभी ने दत्तचित होकर सुना और लाभ उठाया। श्री सतीश सुमन एवं श्री संदीप आर्य ने अपने भजनों से सभी को मन्त्र मुग्ध कर दिया। मंच संचालन का कार्य श्री सत्यपाल भटनागर निभाते रहे। इनके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा के वयोवृद्ध संरक्षक श्री रोशन लाल बेहल जी एवं रानी आर्य ने भी भजनों द्वारा उपस्थित सभासदों को आनन्दित किया। श्री रामफल जी ने भी ओजस्वी प्रवचनों द्वारा वैदिक सन्देश श्रोताओं को दिया। ऋषि लंगर में लगभग २००० व्यक्तियों ने प्रसाद ग्रहण किया। एक दिन ८ जून, २०१३ को दयानन्द मठ दीनानगर जिला गुरदासपुर (पंजाब) की ओर से निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया। स्वामी सदानन्द जी महाराज एक उच्च कोटि के वैद्य हैं उन्होंने रोगियों की जांच की तथा निःशुल्क औषधियाँ दीं।

'ओं क्रतो स्मर'

♦महात्मा आनन्द स्वामी

हे कर्म करनेवाले आत्मा! ओम् को याद कर। चित्त के प्रख्या स्वभाव को बदल दीजिये, उत्तम मार्ग पर लगा दीजिये तो फिर यह ठीक मार्ग पर चलेगा। ठीक बात में इसकी स्थिति होगी, उसमें यह टिकेगा।

इस चित्त में वासना रहती है। इसको बदल दीजिये। ऐसा बना दीजिये कि इसमें कोई बुरी बात न रह सके तो बुरी वासना के लिए इसमें रहना असम्भव हो जाएगा।

इस सम्बन्ध में एक और बात कहनी भी आवश्यक है। व्यास मुनि जी ने चित्त का वर्णन करते हुए उसका एक और स्वभाव भी बताया है। स्वभाव यह है कि एक होने पर भी यह अनेक बातों में चला जाता हैं :

एकमनेकार्थमवस्थितं चित्तम्।

जाप कर रहे हैं गायत्री मंत्र का या ओम् नाम का और यह श्रीमान् चल पड़ते हैं कहीं और। दर्शनकार कहते हैं कि यह चित्त ऐसा ही है। परन्तु ऐसा होना नहीं चाहिए :

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहिं।
मनीराम चहुँ दिशि फिरे, यह तो सिमरण नाहिं।।

सचमुच यह स्मरण नहीं। माला के मनके अंगुलियों पर फिसलते जा रहे हैं। जिह्वा प्रभु का नाम कह रही है और मन महाराज कनाटप्लेस की दुकानों का चक्कर लगा रहे हैं। इस प्रकार स्मरण नहीं होता। बहुत बड़ी रुकावट है यह, बहुत बड़ी हानि। परन्तु इस चित्त को रोकें किस प्रकार ? इसका उत्तर महर्षि पतञ्जलि ने दिया। उन्होंने कहा है :

तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः।

इस रुकावट को हटाने के लिए एक तत्त्व का अर्थात् ब्रह्मतत्व का अभ्यास करो। ओ३म् का जाप करो। लगातार करो। किसी भी प्रकार से करो। निरन्तर जाप करने से अन्त में कृपा अवश्य होगी :

ओ३म् का सिमरण नित्य कर, जिस विधि सिमरा जाय।
कभी तो दीनदयाल जी, बोलेंगे मुस्काय।।

उसकी कृपा अपार है, उसकी ओर से निराश न हो जाओ। जो इतने बड़े विश्व को उत्पन्न करता है, करोड़ों–अरबों सूर्यमण्डलों को बनाता है, जो प्रकाश देता है, वृष्टि करता है, पृथ्वी की छाती से अन्न देता है, फलों में रस देता है, वह निश्चित रूप में इस पुकार को भी सुनेगा। तुमपर भी कृपा करेगा। उसका नाम जपते जाओ, फल मिलेगा अवश्य :

तुलसी अपने राम को, रीझ भजो या खीज।
भूमि पड़े उपजेंगे ही, उलटे सीधे बीज।।

किसी भी प्रकार गिरें, खेत में गिरे हुए बीज आखिर उपजेंगे अवश्य। इसलिए प्रतिदिन जाप करो। भृकुटि में, माथे में, नाक से ऊपर–उस जगह दोनों आंखों के बीच में ओ३म् को देखने का प्रयत्न करो। उपनिषद् कहता है कि ईश्वर का कोई रूप नहीं, कोई रंग नहीं, इसलिए ओम् के रूप में उसे भृकुटि में देखने का प्रयत्न करो। चलते–फिरते, उठते–बैठते हर समय यह नाम लो 'ओ३म् तत्सत्'। लगातार कहते जाओ। चित्त को रोकने का यह सरल उपाय है। निरन्तर अभ्यास करने से वह रुकता है।

परन्तु चित्त का वर्णन तो हो रहा था वासना के कारण, जो प्रभु–दर्शन के मार्ग में सबसे पहली रुकावट है। दूसरी रुकावट जिसपर कल विचार कर रहे थे, क्रोध है। मैंने जहाँ यह कहा कि क्रोध सबसे बड़ी रुकावट है, वहाँ यह भी कहा कि कई अवस्थाओं में क्रोध उचित और आवश्यक भी है। सरदार पटेल के क्रोध की चर्चा मैंने की, जिससे हैदराबाद में बैठे हुए निज़ाम साहब के होश ठिकाने आ गये। अब एक और क्रोध की बात सुनिये।

महाराजा रणजीत सिंह के जरनैल सरदार हरि सिंह नलवा कश्मीर में थे। जब उन्हें महाराज का सन्देश मिला कि पठानों की फौजें अटक के उस पार आ गई हैं, वहाँ पहुँचो, उन्हें हटाओ, तो सरदार हरिसिंह नलवा तेज़ी के साथ कश्मीर से अटक की ओर बढ़े। गढ़ी हबीबुल्ला के मार्ग से एबटाबाद की ओर बढ़ रहे थे कि 'दोमल' के निकट रहने–वाले पठानों ने मार्ग देने से मना कर दिया। नलवा ने कहा, "तुम चाहते क्या हो ? तुम्हारे साथ मुझे लड़ना नहीं।" पठानों ने कहा, "लड़ना हम भी नहीं चाहते। परन्तु हमारी कुछ शर्तें हैं उन्हें माने बिना आप आगे नहीं जा सकते।" सरदार हरिसिंह नलवा ने सारी बात को मज़ाक समझा; पूछा, "क्या शर्तें हैं ?" पठानों ने कहा, "आज शाम को हम आपस में फैसला करके बतायेंगे।" नलवा जी ने कहा, "कोई बात नहीं, आप शाम को बताइये, हम कल चले जायेंगे।" परन्तु जिस बात को हरिसिंह नलवा ने मज़ाक समझा था वह उसके लिए समस्या बन गई। शाम हो गई, कोई शर्त बताई नहीं गई दूसरे दिन भी शर्तें तय नहीं हुई, तीसरे दिन भी नहीं हुई। पठान मार्ग रोके खड़े थे। नलवा जी उनसे बिना लड़े आगे बढ़ना चाहते थे। समय व्यतीत हुआ जाता था। शर्तों का निर्णय होने में नहीं आता था। हरिसिंह चकित थे–करें तो क्या करें ? एक रात वे सो रहे थे तो ठप–ठप की आवाज़ सुनकर जाग उठे। पास खड़े पहरेदार से उन्होंने पूछा, "यह आवाज़ कैसी है ?" पहरेदार ने कहा, "साहब, वर्षा हो रही है।" हरिसिंह बोले, "वर्षा की आवाज़ तो मैं भी सुनता हूँ, परन्तु यह ठप–ठप क्या हो रहा है ? "पहरेदार ने कहा, "सरकार, सब लोग अपनी

छतों पर चढ़कर मिट्टी को कूट रहे हैं। इस प्रदेश की मिट्टी ही ऐसी है कि कूटे–पीटे बिना ठीक नहीं रहती।" हरिसिंह एकदम चौंक उठे; बोले, "क्या कहा तुमने ? एक बार फिर कहो तो!" पहरेदार ने कहा, "सरकार, इस इलाके की मिट्टी ही ऐसी है, कूटे–पीटे बिना दुरुस्त नहीं होती।" नलवा जी हंसकर बोले, "यह मेरी ही गलती थी कि इस मिट्टी की विशेषता को मैं समझ नहीं पाया। "सेना को आज्ञा दी, "इसी समय पठानों पर आक्रमण कर दो! जहाँ जो मिले, उसको वहीं पीट डालो!" थोड़ी देर में चारों ओर मारपीट होने लगी। प्रातःकाल होने से बहुत पहले कितने ही पठान गर्दनों में पल्लू डाले उनके पास आये। हरिसिंह गरजकर बोले, "क्या चाहते हो ?" पठानों ने सिर झुकाकर कहा, "कुछ नहीं श्रीमान्!" हरिसिंह बोले, "क्या शर्तें हैं तुम्हारी ?" पठानों ने कहा, "सरकार, कोई शर्तें नहीं। मार्ग साफ है, आप जाइये, कोई आपको रोकेगा नहीं।" यह है ठीक और उचित क्रोध जो घर से बाहर देश की रक्षा के लिए, उसकी स्वतन्त्रता के लिए और धर्म की रक्षा के लिए किया जाए। यह क्रोध आत्म–दर्शन के मार्ग में रुकावट नहीं। आत्म–दर्शन के मार्ग में रुकावट है वह क्रोध, जो घर में किया जाये, स्वार्थ के लिए किया जाये। ऐसा क्रोध घर का, परिवार का, जाति का, देश का, सबका नाश कर देता है। ऐसा क्रोध बुद्धि को नष्ट करता है। बुद्धि के नाश होने से सर्वनाश होता है "विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।" विनाश का समय जब आता है, तब बुद्धि मारी जाती है। यह क्रोध ही वह सुरा या शराब है जो भक्त और भगवान् के मध्य दीवार बनके खड़ी हो जाती है।

आज एक माँ कहने लगी, "आप घर में क्रोध न करने की बात कहते हैं परन्तु करें क्या ? बच्चे जब शैतानी करते हैं तो क्रोध आ ही जाता है।" मैंने उन्हें हंसकर कहा, "माँ! बच्चे ने शैतानी की, आपने क्रोध किया। तब दोनों में अन्तर क्या हुआ ? देखो, मैं बच्चों की वकालत नहीं करता। मैं भी तो आखिर पिता रहा हूँ, दादा रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि बच्चा ऊधम मचाता है, परन्तु उसके स्वभाव को सुधारने का उपाय यह नहीं कि क्रोध में आकर आप लट्ठ लेकर उसके सिर पर सवार हो जायें। ऐसा करने से उसका स्वभाव सुधरेगा नहीं। उसमें विरोध की भावना जाग उठेगी। इसलिए जब वह शरारत करे तब उसे कुछ मत कहिये। जब क्रोध शान्त हो जाय तब प्यार से उसको समझाइये, सुन मेरे पप्पू! मेरे गप्पू! देख, उस समय तूने शैतानी की, इससे इतनी हानि हो गई। यह घर तेरा भी तो है। यह तेरी ही हानि है। आगे ऐसी ग़लती न करना! तब उसकी आंखें नीची हो जायेंगी। उसके हृदय में पश्चात्ताप उत्पन्न होगा, वह सुधरने लगेगा। यदि आप क्रोध में आकर मारपीट से काम लेंगे तो वह रोयेगा अवश्य, चिल्लायेगा भी, सुधरेगा नहीं।"

चुनाव समाचार

आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी का वार्षिक चुनाव दिनांक १६ जून २०१३ को श्रीमति यशोमति आनन्द की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें सर्व सम्मति से श्री रामफल सिंह आर्य जी को प्रधान चुना गया तथा कार्यकारिणी के चुनाव का अधिकार भी उन्हें दिया गया। अतः उन्होंने निम्नलिखित अधिकारियों को आर्य समाज के संचालन हेतु नियुक्त किया :–

प्रधान	: श्री रामफल सिंह आर्य (सर्वसम्मति से निर्वाचित)
वरि० उप–प्रधान	: श्री दर्शन मेहन
मन्त्री	: श्री सत्य प्रकाश शर्मा
कोषाध्यक्ष	: श्री नरेश काम्बोज
प्रचार मन्त्री	: श्री राजेश रावल
पुस्तकालयाध्यक्ष	: श्री शमशेर सिंह
स्टोर इन्चार्ज	: श्री देवराज चोपड़ा
अधिष्ठाता आर्य वीर दल	: श्री श्रवण आर्य
नगर नायक आर्य वीर दल	: श्री पवन आर्य
अन्तरंग सदस्य	: सर्व श्रीमति रानी आर्या, सुदेश, भावना शर्मा, अलका रावल

–सत्य प्रकाश शर्मा, मन्त्री, आर्य समाज, सुन्दरनगर कालौनी

प्रकृति का ताण्डव

प्रकृति ने ताण्डव दिखाया,
लाखों की जिन्दगी में कहर ढाया
हज़ारों बेघर हो गए, सब की रूह कांप गई,
यह कैसी सुनामी लहर आई।
सबको बहाकर ले गई।,
बाकी थे कई सपने, सब का अरमान ढाया,
दाने को मोहताज किया, ऐसा तूफान आया,
देखो आज प्रकृति ने, अपना ताण्डव है दिखाया।

–रमा शर्मा, खरीहड़ी, सुन्दरनगर

चरित्र

मनुष्य की आकांक्षाओं का आकाश वहीं तक फैला है,
जहाँ तक उसकी कल्पनाओं की उड़ान सम्भव है।
अपने विचारों पर नज़र रखिए, वे शब्द बन जाते हैं।
अपने शब्दों पर नज़र रखिए, वह कर्म बन जाते हैं।
अपने कर्मों पर नज़र रखिए, वे आदत बन जाते हैं।
अपनी आदतों पर नज़र रखिए, वे चरित्र बन जाते हैं।
अपने चरित्र पर नज़र रखिए,
क्योंकि वह आपकी नियति बनाता है।

–रमा शर्मा, खरीहड़ी, सुन्दरनगर

राष्ट्रवाद बनाम आतंकवाद

♦अभिमन्यु कुमार खुल्लर, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०)

सन् १८८५ में कांग्रेस की स्थापना शासक जाति अंग्रेज़ के ए०ओ०ह्यूम ने भारत को स्वतंत्रता दिलवाने के लिये नहीं की थी बल्कि अंग्रेज़ी सत्ता का वर्चस्व सदा, सर्वदा बनाये रखने के लिये की थी।

महर्षि दयानंद ने १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना भारत को एक सर्वोन्नत, सर्वतंत्र, स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के लिये की थी।

अमरग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में महर्षि ने स्पष्ट घोषणा की है कि विदेशी राज्य कितना ही अच्छा क्यों न हो, वह अपने राज्य से बढ़कर नहीं हो सकता। बाल गंगाधर तिलक ने जयघोष किया–''स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूँगा।''

डॉ० केशव बलिराम हेडगेवार ने सन् १९२५ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। उनका मंत्र था कि युवा राष्ट्रीय शक्ति को एक सूत्र में पिरो दो, राष्ट्र स्वयं ही उठ खड़ा होगा। यह बड़ी आसानी से राष्ट्र गौरव व देशप्रेम की भावना कोमल मनमस्तिष्कों में भरकर किया जा सकता है। स्थापना से लेकर आजतक संघ की इस विचारधारा में किंचित मात्र भी परिवर्तन नहीं हुआ है। संघ के द्वार प्रारंभ से लेकर आज तक प्रत्येक हिन्दू के लिये खुले हैं। यहाँ 'हिन्दू' से आशय हिन्दुस्तान (भारत) के निवासियों से है, जाति विशेष से कदापि नहीं।

इस घोर राष्ट्रवादी संगठन को भारत सरकार के गृहमंत्री श्री सुशील कुमार शिन्दे ''आतंकवादी'' संगठन घोषित कर रहे हैं। किसी भी छोटे–बड़े कांग्रेसी ने उनके कथन का विरोध नहीं किया है, इसलिये यह पार्टी व सरकार दोनों का ही अभिमत मानना चाहिए। यह विनाशक तत्व नई पीढ़ी को घुट्टी में पिलाए जा रहे हैं। राष्ट्रनिर्माण की कांग्रेसी सोच 'धन्य' है।

यह सर्वमान्य सोच है कि जाति अपने इतिहास को सुरक्षित नहीं रखती। अपने ऐतिहासिक पुरोधाओं से अनुप्राणित नहीं होती, वह मिट जाती है। षडयंत्रकारी, कुचक्री, स्वार्थी राजनीतिज्ञ अपने देश में ही पूर्ववर्ती पुरूषों की महिमा को नष्ट कर अपने वर्चस्व, अपने गुणगान कराने में माहरत हासिल कर लेते हैं। सुभाषचन्द्र बोस, लाजपतराय, डॉ० पुरूषोत्तम दास टण्डन, लाल बहादुर शास्त्री, अब कैलेण्डरों में लाल रंग की शोभा बढ़ाते है। महर्षि दयानंद व स्वातंत्र्यवीर सावरकर को कौन याद करे ? मोहनदास करमचन्द गाँधी–महात्मागाँधी अब २ अक्टूबर व ३० जनवरी को ही याद किये जाते हैं। अलबत्ता नोट पर उनकी आकृति छापकर कुछ स्थायित्व प्रदान किया है। नहीं तो इण्डिया इज़ इन्दिरा और इन्दिरा इज़ इण्डिया का राग जमकर चला। अब चल रहा है–''युवा हृदय सम्राट''। लगता है यह जयघोष भारतीय जनमानस के गले में ठीक–ठीक, जैसा कांग्रेसी चाहते हैं, नहीं उत्तर रहा है। अब 'बरूआ' जैसे कांग्रेसी भी नहीं रहे, अब उनका स्तर 'दिग्विजयसिंह' जैसा हो गया है।

पेट में खलबली मची हुई है। रात की नींद हराम हो गई है। महाकुंभ के अवसर पर हिन्दू साधुसंतों का जमावडा राष्ट्रीय जागरण की बात करता है। विद्रोही बाबा रामदेव का प्रशस्तिगान करता है। क्या यह सब उगते हुए सूर्य–नरेन्द्र मोदी के 'राजतिलक' की तैयारी का हिस्सा तो नहीं जिसे वे 'चड्ढीधारी', 'संघी' निरूपित करते हैं। जिसे वे गोधराकाण्ड का 'हत्यारा' कहकर इतिहास में लपेट कर कहीं कोने में फैंक देना चाहते हैं। वही जिसे अमेरिका व यूरोप के देश 'गोधरा काण्ड के कारण वीसा नहीं देना चाहते। हिटलर के जर्मनी का प्रचारमंत्री गोयबल्स भी कांग्रेस के प्रचार तंत्र को देखकर चक्कर में पड़ गया होगा। इतने सशक्त विश्व मीडिया के होते हुए भी यह झूठ कैसे चला कि जिसने वीसा माँगा ही नहीं उसे यह कहकर कलंकित किया जावे कि व्यापक नरसंहार का दोषी होने के कारण उसे वीसा नहीं दिया जा रहा है। आम जन को यह मालूम ही नहीं कि वीसा (अनुमति) वह व्यक्ति माँगता है जिसे दूसरे देश जाना होता है। कोई देश वीसा बाँट कर अपने देश बुलाता नहीं है। यह भांडा भी बिलकुल फूट गया, जब जर्मनी व इंग्लैण्ड के राज़नयिकों ने खुद जाकर मोदी से भेंट की। युवा हृदय सम्राट व देश की पुरातन पार्टी की इटली मूल की निवासी का प्रचार तंत्र 'नरेन्द्र' की आँधी को कैसे रोक पायेंगे ? नरेन्द्र नाम में ही कुछ चमत्कार है। एक नरेन्द्र ने शिकागो में विश्व धर्म कांग्रेस को हिला दिया। दूसरा नरेन्द्र विश्व राजनीति के ध्रुवीकरण को प्रभावित करने वाला स्पष्ट प्रतीत होता है। बस खतरा है तो खुद की पार्टी के 'मीरज़ाफरों' से व ''राष्ट्रीय एकता'' के सूत्रधार को भितरघात से। भारतीय मानस को एक सूत्र पिरोने का एक स्वर्णिम अवसर हमको अपने जीवनकाल में निकट भविष्य में मिलने वाला है। धैर्य से प्रतीक्षा कीजिये।

'राष्ट्रवाद बनाम आतंकवाद' लघु लेख २३ फरवरी, २०१३ को मैंने कुछ पत्रिकाओं को प्रकाशनार्थ प्रेषित किया था। इस सम्बंध में टाइम्स ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली संस्करण के ८ मार्च, २०१३ के अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार अमेरिका की पेनसिलवेनियाँ यूनीवर्सिटी के व्हार्टन इन्डिया इकौनोमिक फोरम में २२–२३ मार्च, २०१३ को आमंत्रित किए जाने का विरोध सफल हो जाने पर अप्रवासी भारतीयों की

जोरदार कोशिशों के पश्चात् नरेन्द्र मोदी कणविती (अहमदाबाद) से ६ मार्च, २०१३ को एडीसन न्यूजर्सी व शिकागो के नागरिकों को सीधे प्रसारण में संबोधित करेंगे। विस्तृत लेख के कुछ अंशों को जो मेरे लेख की पुष्टि करते हैं, यहां उद्धृत करता हूँ। ...अमरीकी संसद (कांग्रेस) में सांसद एनी फैलियोमेवेगा ने कहा–अमेरिका का उस व्यक्ति से संवाद स्थापित करना चाहिए जो भविष्य में भारत का प्रधानमंत्री हो सकता है। व्हार्टन कान्फ्रेस से अपना नाम वापिस लेते हुए अमेरिकन एन्टरप्राइज के फैलो सदानन्द धूमे ने वाल स्ट्रीट जॉसन के ब्लाग में लिखा भारतीय अर्थव्यवस्था पर चिंतन करने जा रही उस कान्फ्रेस को किस प्रकार गम्भीरता से लिया जा सकता है जो उस व्यक्ति को स्थान नहीं दे सकती जो भारत में सबसे अधिक प्रभावशाली ढंग से सफलतापूर्वक कार्य करने वाले राज्य का प्रमुख है और जिसकी उपलब्धियों की विश्व प्रैस के आए दिन चर्चा होती रहती है। रोन सोमर्स जो यूएस इंडिया बिजनेस कांउसिल के अध्यक्ष हैं, ने मोदी को व्हार्टन न बुलाए जाने के निर्णय को दुर्भाग्यपूर्ण और अपमानजनक बताया और उल्लेख किया कि संस्था का उक्त निर्णय अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संदर्भ में उसे (संस्था को) अत्यन्त निम्न स्तर पर खड़ा करता है।

'आर्यजन श्रेष्ठजनों का समाज है'

♦शास्त्री दीनानाथ गौतम, जिला मण्डी (हि० प्र०)

आर्य श्रेष्ठजनों को कहा जाता है, अतः महर्षि दयानन्द ने साकार सनातन धर्म और निराकार आर्य समाज धर्म में केवल मूर्ति पूजन को उपेक्षित रखते हुए वैदिक सूक्तों व मन्त्रों को समझने में और अनुपालन करके के लिए सरल सुविधा का रास्ता आर्यजनों को सुझाया है आज आर्यजन भी स्वामीदयानन्द जी के सरल सुविधा जनक ज्ञान मार्ग में वैदिक यज्ञों व रहस्यों को पार रहे हैं। अतः स्वामी दयानन्द जी को समाज के सही दिशा निर्देशक के रूप में एक महान् आत्मा के रूप में जाना जाता है जिन्होंने "कृण्वन्तों विश्वमार्यम्" का एक नया सन्देश हमारे वैदिक यज्ञों व मन्त्रोनुष्ठानों को सही अर्थों में उजागर किया है। उनका सन्देश था कि सनातन धर्माचार्यों में पाखंड अधिक से अधिक आ चुका था इसलिए वैदिक धर्म की मूलभूत प्रक्रियाओं की जानकारी प्रत्येक समाजी को होनी चाहिए। उन्होंने बाह्य आडम्बरों का ही विरोध किया है, वैदिक मन्त्रों, हवन–यज्ञ का कदापि विरोध नहीं किया है। आज आर्य समाज जैसी संस्थाओं के माध्यम से वैदिक मन्त्रों का उच्चारण एवं हवन–यज्ञादि सर्वत्र गुंजायमान हो रहे हैं, लेकिन प्रक्रिया सरल है और आम आदमी की पसंद है। इसलिए स्वाभाविक ही है कि युग परिवर्तन के साथ–साथ कर्म–काण्ड प्रक्रियाओं में भी समयानुसार परिवर्तन लाना भी जरूरी था। अतः भारतीय समाज महर्षि दयानन्द जी का आभारी है, जो एक नई सोच व सम्यक् दृष्टि समाज को दे गये हैं और आज समाज उनके पदचिन्हों पर चल रहा है।

वस्तुतः भारतीय समाज में समय–समय पर महर्षियों –मुनियों और धर्म संस्थापकों द्वारा युगानुसारी परिवर्तन का सन्देश इस देश के जनमानस को मिलता रहा है। अतः महान् शंकराचार्य जी का चंहु दिशाओं के मठों की स्थापना, महात्मा बुद्ध का बोधगया के बोधी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्रकाश प्राप्त होना, महावीर जैन का जैन समाज की स्थापना, गुरू नानक का सत् श्री अकाल का शुभ संन्देश अथवा ग्रन्थ वाणी का जन–जन में प्रचार–प्रसार होना न केवल भारत तक ही सीमित ज्ञानोपदेश उपरोक्त दिग्दर्शकों, सन्तों महात्माओं का रहा है। अपितु बौद्ध धर्म के तो सम्राट अशोक व उनके जातक महेन्द्र कुकाल के द्वारा लंका से लेकर जापान, तिब्बत–चीन तक फैला है। आज भी महामहिम दलाईलामा निर्वासित जीवन में भी धर्म दिशा निर्देशन के रूप में बौद्ध धर्म का सदुपदेश बौद्धों को देते हैं और जैन समाज भी अपने ही शांत परिवेश में धर्मानुष्ठान में प्रयासरत्त है। गुरूवाणी के प्रचारक सिक्ख धर्म तो वेशभूषा में भी एक विशेष पहचान भी बनाए हुए है। श्री गुरू ग्रन्थ साहब का पाठ, गुरूवाणी का प्रचार ही गुरूद्वारों के ग्रन्थियों द्वारा संगीतबद्ध होकर निरंतर चल रहा है। अतः मुस्लिम शिया–सुन्नी लोग भी तो कुरान शरीफ पढ़ते हैं और मस्जिदों में अल्लाह के नाम भी खूब गूंजाते हैं। अपना–अपना धर्म है और अपना–अपना समाज है। इधर पश्चिम देशों में प्रभु यिशु का गिरिजाघरों में शब्दोच्चारण पादरियों द्वारा सस्वर गूंजित होता है अतः पारसियों का अपना धर्म है। मगर ईसाईयों की एक बात जो अखरती है, विश्व जन मानस को कि वह धर्म परिवर्तित करवाने के लिए लोभ, प्रलोभन में मनुष्य को घेर कर ईसाई बनाता है और धर्म परिवर्तन में ज्यादा विश्वास रखता है। यह सुरसा की भान्ति बत्तीस योजन का मुंह फैलाकर ही अपने धर्म को प्रभावी बनाना चाहता है। यह तरीका भी गलत है, तो सोच भी सर्वथा निन्दनीय है। किसी को भी लोभ–लालच में फंसा कर धर्म परिवर्तन करने को किसी को विवश करना भी तो

अधर्म है और जघन्य अपराध है। एक तो स्वतः सहज स्थिति में किसी का धर्म परिवर्तन करना तो अलग बात है जैसे अमेरिकन सेमुअल इवान स्टोक्स ने कुष्ठ मिशन में भारत आकर हिमाचल प्रदेश के कोटगढ़ में बस कर स्वतः ही भारतीय साधु सत्यानन्द स्टोक्स अपने आप को स्वीकार किया और कोटगढ़ में श्री गीता मन्दिर बनाकर अपना निवास भी सुनिश्चित किया था, आज उनका परिवार पूर्णतः हिन्दू बन चुका है, यह तो अलग बात है। स्वेच्छा से ही धर्म परिवर्तन करना पाप एवं अपराध नहीं है। किन्तु विश्वभर के ईसाईसों अर्थात् मिशनरियों द्वारा लोभ–लालच देकर धर्म परिवर्तन कराना सर्वथा निन्दनीय भी है तो वर्जनीय भी रहना चाहिए। इसी तरह मुस्लिम धर्मों में भी एक गलत बात देखने को मिलती है कि वह मस्जिदों के जरिए मानवीय हिसंक उपद्रवों की ही साजिश रचा करते हैं। जिस मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारों और चर्च में मानवीस क्रूर हिंसक मनोवृतियों का समागम होता है और मानवीय अपराधों की हिंसक एवं उपद्रवी योजनाएं बनती हैं, वो चाहे काशी हो अथवा काबा हो। चर्च हो या फिर बौद्ध मठ हो या जैन मन्दिर, सर्वथा निन्दनीय विषय रहना चाहिए। अतः मानवीय हिंसा या फिर उपद्रव करना अर्थात विध्वंस की गतिविधियों में ही लगे रहना और धर्मान्धता का नारा देना मानवता का परित्याग कर अमानवता का परिचय देना है। हमारे वेद उपनिषदों में, गुरू ग्रन्थों में कहीं भी मानवीय हिंसा को श्रेष्ठ नहीं माना है। किन्तु आज जो उग्रवाद फैल रहा है, बम विस्फोट हो रहे हैं ये भी तो धर्म की आड़ लेकर किये जा रहे हैं। कौन धर्म व सम्प्रदाय ऐसा है जो मनुष्यों द्वारा ही मनुष्य की हत्याएं करने की इजाज़त देता है। फिर वह धर्म नहीं अधर्म है। वह सर्वधर्म समभाव नहीं धर्मान्धतामय सम्प्रदायवाद है। इस में मुस्लिम धर्मान्ध लोग अग्रणी हैं, जो किसी की जान लेने से बदला चुकाने की बात मन में रखते हैं। अतः मुस्लिम तानाशाहों से संसार के अन्य धर्मों के लोग भी हमेशा परेशान होते रहे हैं, जबकि ईसाई लाड़–प्यार से धर्म परिवर्तन की प्रक्रियाओं को अपनाते रहे हैं। एक हिंसक मार्ग पर ही धर्मान्धता के कारण उग्रवाद पर विश्वास रखता है तो दूसरा लोभ–प्रलोभन से घेर कर ही अपना धर्म प्रचार करता है। वास्वत में दोनों ही तौर–तरीके हमेशा निन्दनीय हैं। अन्य धर्मों में स्वेच्छा पूर्वक धर्म ग्रहण एवं धर्म परिवर्तन यदा–कदा होता रहता है।

"वेदोऽखिलो धर्म मूलम्"।

अर्थात् वेद ही सम्पूर्ण धर्म, विद्या, सदाचार ओर मानसिक तथा शारीरिक शुद्धता का आधार हैं। परमादरणीय रामफल जी महाराज माता रानी आर्या तथा श्रवण आर्य के साथ १६.०४.२०१३ को जोगिन्दर नगर के दयानन्द भारतीय पब्लिक विद्यालय के प्रांङ्गण में पधारे ओर यज्ञ होम इत्यादि के द्वारा बच्चों का विद्यालय के प्रधानचार्य तथा अध्यापक व अध्यापिकाओं का मार्गदर्शन किया। उन्होंने अपने अनमोल वचनों से छात्रों के मन के अन्दर उत्तम विचार व आदर्श संस्कार भरने की कोशिश की। उन्होंने हम सभी को संस्कार संस्कृति व शिक्षा के बारे में विस्तार पूर्वक बताया उन्होंने कहा जिस व्यक्ति के अन्दर सभ्यता, जितेन्द्रियता और विद्या आदि गुणों का विकास हो सके उसे शिक्षा कहते हैं। उन्होंने मनुष्य के उन पांच महान कार्यों को बताया जिसे संसार में कोई भी प्राणी जीव–जन्तु नहीं कर सकता है। यदि मनुष्य वेद नहीं पढ़ सकता है तो अपने माता–पिता तथा गुरुजनों की निस्वार्थ भाव से सेवा करे। क्योंकि केवल मात्र ईश्वर व माता–पिता के पास ही दया करने का व न्यायिक कार्य करने का अधिकार है। अतः अपने माता–पिता की सेवा करके हम ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। जिस प्रकार आज का विद्यार्थी मोबाईल, इन्टरनैट, टी.वी., विड़ियोगेम के जाल में फंसता जा रहा है उसे मात्र अध्यापकों व प्रधानाचार्य के द्वारा हि कठिन परिश्रम, संस्कार व दिन प्रतिदिन ''ऊँ'' की ध्वनि से ही दूर किया जा सकता है। हमें बिना किसी से द्वेष की भावना रखकर निःस्वार्थ भाव से अपनें कार्य के प्रति, बच्चों के अन्दर फैल रहे और अन्धकार के प्रति ज्ञान रूपी प्रकाश का दीपक जलाना है व हर उस अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर भगाना है। क्योंकि आजकल हर मनुष्य दुःखी है ओर दुःख का मूल कारण अज्ञान ही है। अज्ञान को नष्ट करने के लिए हमें नित्य ईश्वर का ध्यान, अपनें तन व मन को मांस, मछली तामसिक भोजन न करके, माता व पिता की नित्य सेवा करके, नित्य या सप्ताह में एक दिन अपनें घर में यज्ञ करके हम अज्ञान को नष्ट कर सकते हैं।

–अमित कुमार (शास्त्री) अध्यापक

वरिष्ठ भजनोंपदेशक पं. ओम्प्रकाश वर्मा के रोचक व प्रेरक संस्मरण

तुम साधु-वाधु नहीं हो

♦इन्द्रजित्‌देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

देश को स्वतन्त्र कराने के लिए क्रान्तिकारी आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने वालों में आर्य समाज के उद्‌भट पण्डित श्री पं. जगदीश चन्द्र शास्त्री जी थे। बलिदानी भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव तथा रामप्रसाद बिस्मिल आदि के निकट साथी आप रहे। स्वतन्त्रता आन्दोलन में आप बैजनाथ (हिमाचल) सौराष्ट्र, रावटी, बिलासपुर, जम्मू व होशंगाबाद आदि स्थानों पर गुप्त रूप में कार्यरत रहे। वे कई पुस्तकों के लेखक भी थे। देश की स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पश्चात् वे वैदिक धर्म के प्रचार में बहुत तत्परता से सक्रिय हो गए। मुझे उनके साथ कई स्थानों पर प्रचारार्थ जाने का सौभाग्य मिला।

मेरे द्वारा पूछने पर उन्होंने अपने क्रान्तिकारी दिनों की घटनाएँ सुनाई थीं। उन में एक घटना इस प्रकार है–

गुरुकुल, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में वे सन् १९४३ ई. में स्वामी विज्ञानन्द सरस्वती नाम से रहते व पढ़ाते थे। वहाँ उन्होंने एक सरकारी विज्ञापन ऐसा पढ़ लिया जिसमें लिखा था कि पुलिस को आ. जगदीश चन्द्र शास्त्री की तलाश है तथा उसका पता देने वाले को उचित पुरस्कार दिया जाएगा। सन् १९३१ ई. के सुचेतगढ़ (जम्मू) काण्ड के सम्बन्ध में पुलिस को उसकी आवश्यकता है। इस काण्ड में स्यालकोट–लाहौर को जाने वाली एक रेल गाड़ी (सुचेतगढ़ मार्ग) में उसने ३ पुलिस कर्मियों को मारा है।"

विज्ञापन को पढ़ते ही वे देहरादून को चल पड़े। वहाँ वे राजपुर मार्ग पर एक आश्रम में आए। वहाँ एक साधु ने पूछा–"भोजन करोगे ?" उत्तर में उन्होंने 'हाँ' कह दिया। उनका एक कान थोड़ा–सा कटा हुआ था। इस आधार पर उस साधु ने इन्हें पहचान लिया। पहचानने वाला भोजन तो लाया नहीं परन्तु वह तुरन्त पुलिस थाने में पहुँच गया व कोतवाल को बताया कि आचार्य जगदीशचन्द्र शास्त्री मिल गया है व मेरे आश्रम में बैठा है। आओ तथा उसे पकड़ लो।" पुलिस तुरन्त आश्रम में आई व शास्त्री जी को पकड़कर थाने में ले आई। वहाँ पूछताछ शुरू हुई तो पुलिस अधीक्षक ने पूछा–

"तुम जगदीशचन्द्र शास्त्री हो ?"

"कौन जगदीश चन्द्र ?

"वह जगदीश चन्द्र, जिसने सुचेतगढ़ काण्ड में ३ पुलिस कर्मियों को मारा था।"

"मैंने किसी पुलिस कर्मचारी को आजतक नहीं मारा। मैंने तो सुचेतगढ़ का कभी नाम भी नहीं सुना।"

"इसके झोले (=थैले) की तलाशी लो" पुलिस अधीक्षक ने एक सिपाही को आदेश दिया।

उन्होंने अपना थैला वहाँ खड़े सिपाही की ओर तुरन्त फैंक दिया। उसमें एक पिस्तौल भी था। तलाशी लेते समय सिपाही ने सब से ऊपर रखा एक वस्त्र निकाला। फिर दूसरा व तीसरा वस्त्र मिला। तीसरे वस्त्र को निकाला तो उसमें रखे चान्दी के अस्सी रुपए भूमि पर गिर पड़े। सबका ध्यान उनकी ओर चला गया तथा थैले की तलाशी रोक दी गई। तब पुलिस अधीक्षक ने भारी स्वर में पूछा "ये रुपए तुम्हें कब मिले ? साधु के पास इतने रुपए क्यों व कहाँ से आए हैं ?"

"मैं पीछे दिल्ली से आया हूँ व गंगोत्री में तीर्थ यात्रा हेतु जा रहा हूँ। मुझे मेरे भक्तों ने ही २–२ रुपए दिए थे, जिन्हें आप देख रहे हैं। ये रुपए इसलिए मिले हैं ताकि मैं उन भक्तों की ओर से गंगोत्री में प्रसाद बाँट सकूँ।"

इस उत्तर को सुनकर पुलिस अधीक्षक पर अनुकूल प्रभाव पड़ गया तथा अपनी जेब से दश रुपए निकाल कर उसने आचार्य जी को दिए व कहा–"ये मेरी ओर से रखें तथा गंगोत्री में पहुँचकर मेरी ओर से भी भक्तों में प्रसाद बाँट दें।" तब सिपाही को एक थप्पड़ मारकर बोला तुम प्रतिदिन किसी न किसी साधु को ऐसे ही पकड़ लाते हो।" थैले में तीसरे वस्त्र के नीचे पिस्तौल पड़ा था। वहाँ तक पहुँचने का अवसर ही उपस्थित नहीं हुआ क्योंकि तीसरे वस्त्र व उसमें रखे अस्सी रुपए पिस्तौल तक सिपाही के हाथ पहुँचने में बाधक बने।

आचार्य जी निश्चिन्त होकर उठे व चलने लगे तो पुलिस अधीक्षक ने यह कहकर २ रुपए सिपाही को दिए व कहा–"महात्मा जी को लेजा व भोजन कराकर विदा करो।" वहां खड़े थानेदार ने भी पाँच रुपए प्रसाद बाँटने के उद्देश्य से दे दिए। वे सिपाही के साथ बाहर निकल पड़े। सिपाही उन्हें लेकर एक होटल में पहुँचा परन्तु वे चाह रहे थे कि इस से तुरन्त मुक्ति मिले। अतः सिपाही से बोले–"ये २ रु. मुझे दे दी। मैं आगे जाकर कहीं भोजन ले लूँगा अथवा इन रुपयों से भोजन दिलवा दो। उसे लेकर मैं चलूँगा व किसी बावड़ी पर बैठकर भोजन कर लूँगा।"

सिपाही ने उन्हें भोजन दिलवा दिया व वापिस लौटते हुए बोला–"तुम उन दोनों की आँखों में तो धूल झोंक आए हो परन्तु मैं जानता हूँ कि तुम कोई साधु–वाधु नहीं हो, तुम हो तो जगदीश चन्द्र ही न।"

"तुमने फिर मार खानी हो तो मैं चलूँ थाने में ?"

सिपाही कुछ नहीं बोला। वह वापिस लौट गया तथा शास्त्री जी दूसरी दिशा में चल दिए।

''गौवंश की रक्षा हो''

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

आर्य संस्कृति में गाय का बहुत महत्त्व था। वेदों में कई ऋचाएँ आई हैं जिनमें प्रार्थना की गई है, कि गायें हमारे लिए सुखकारी हों। गौदान महादान माना जाता था। उस व्यक्ति को समाज में धनी माना जाता था जिस के पास गौओं की संख्या अधिक होती थी। जब तक मुद्राओं का प्रचलन आरम्भ न हुआ था, गाय को विनमय की इकाई माना जाता था। गाय के बदले आप कोई भी वस्तु ले सकते थे। कारण हमारा देश कृषि प्रधान था और एक कृषक के लिये गाय से अधिक उपयोगी कुछ भी न था। गाय से अमृततुल्य दूध, घी, दही इत्यादि पदार्थ तो मिलते ही हैं। परन्तु इस का गोबर तथा मूत्र, मानव रोगों के उपचार के लिए प्रयोग में लाया जाता है। गोबर की खाद अन्य सभी रासायनिक खादों से उत्तम मानी जाती है। बैल हल चलाने, गाड़ी खींचने, माल ढोने आदि के काम में आते हैं। माँ तो बच्चे को दूध एक वर्ष तक पिलाती है परन्तु गाय के दूध का सेवन हम आयु भर करते है। तभी तो हिन्दु धर्म में इसे माता के रूप में मान्यता दी जाती है।

परन्तु चाहे गाँव हैं या शहर मानसिकता बड़ी तेजी से फैलाती जा रही है। जैसे ही गाय बूढ़ी, रोगी या अपाहिज हुई, उस का उपचार करने के स्थान पर उसे खुला छोड़ दिया जाता है। गाय विचारी भटकती हुई कभी एक खेत में मुँह मारती है तो कभी दूसरे खेत में। लोग व्यवसायिक सोच को सन्मुख रखते हुए, गाय को चरने के लिए खुला छोड़ देते हैं। गौ माता की भावना लुप्त हो रही है और लाभ के तराजू में तोल कर गाय का तिरस्कार किया जा रहा है। आवारा और लावारिस पशु तस्करों और अवैध व्यापारियों के हत्थे चढ़ रही है और वे बेरोक टोक गौवंश को उन राज्यों को ले जाया जा रहा है जहाँ गौकशी पर प्रतिबंध नहीं है। पहले गाँवों में चरागाहें होती थीं। गौघाट पशुओं के पानी पीने के लिए होते थे। ऐसे ही छोड़ी गई गौओं के लिए गौ सदन गौशालाएँ होती थीं। ये सभी प्रबन्ध समाज करता था। इस में जरा भी सरकार का दखल नहीं होता था। चरागोहों पर लोगों ने अब अधिकार कर लिया है। गौशालाएँ और गौघाट देखरेख के अभाव में समाप्त हो गए हैं। हम ने हर बात में सरकार की ओर देखना आरम्भ कर दिया है। गौसदन आदि के लिए सरकार की ओर से अनुदान मिलने लगा है। परन्तु उस का उपयोग गौ वंश के लिए न करके सम्बन्धित व्यक्ति ही इसे हड़पने लगे। बिहार के चारा घौटाले की गूँज तो सब ने सुनी बड़ा मुर्गा जब बाँग देता है तो छोटे उससे बाँग देना सीख जाते हैं यही बात गाय के नाम से मिले अनुदान पर लागु होती है। जिस के हाथ जो लगे खा जाता है। यदि समाज संगठित हो कर गौवंश की रक्षा का बीड़ा उठाये तो कुछ बन पड़ेगा।

आज तक केन्द्र सरकारें गौकशी पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने से बचती रही हैं। कुछ प्रान्तों में गोकशी पर प्रतिबंध नहीं है। वे इस में अल्पसंख्यकों की नाराजगी इसलिये मोल नहीं लेना चाहतीं क्योंकि वे उनके वोटों की आस खोना नहीं चाहते। गोतस्करों और गोबध अपराधियों में कुछ हिन्दू भी पाये गये। बैसे भी गौपालन कम होता जा रहा है। गौवंश की संख्या तेजी से गिरी भी है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि गाय हमारे जीवन में पहले भी उपयोगी थी और आगे भी रहेगी। चाहे विज्ञान कितनी ही प्रगति कर ले। बैलों के स्थान पर ट्रेक्टर कार्य करें, परन्तु दूध और उस से मिलने वाले पदार्थ और मिठाइयाँ हमें स्वाद, ऊर्जा, पौष्टिकता प्रदान करते रहेंगे। गोकशी पर देश में पूर्ण प्रतिबंध लगाना चाहिये तथा गोवंश की रक्षा को सामाजिक आन्दोलन के रूप में चलाया जाना चाहिए। जैविक कृषि गौवंश के बिना सम्भव नहीं। पश्चिम अब जैविक कृषि की उतमत्ता का कायल हो गया है और जैविक कृषि को अधिमान दिया जा रहा है।

माँ

मेरा भी हक है माँ इस दुनिया में आने का
तेरी कोख से जन्म लेकर जीवन धन्य बनाने का
तेरा नाम मैं ऊंचा कर दूँ और प्रसिद्धी दिलवाऊ
राष्ट्र समाज और परहित में अपना फर्ज़ निभाऊं
जन्म लेने दे मुझको माता तू भी तो एक नारी है
जन्म से पहले टूकड़े करने की कैसी ये तैयारी है ?
मेरा भी एक सपना है माँ इस धरती पर आने का
तेरी कोख से जन्म लेकर जीवन धन्य बनानें का
बेटी घर की शान है, इसको तो तुम आने दो
इस घर को धन्य करने इसको चहचाने दो
बिटिया के आने से तेरी कोख धन्य हो जायेगी
शिक्षा, दीक्षा, संस्कारों से तेरा नाम चमकायेगी
मेरा भी मन करता माता तेरी बेटी कहलाने का
मैं अजनबी तुम्हें क्या शिक्षा दूं केवल ये बता दूं मैं
मेरा आना बहुत जरूरी ये तो आज जतादूं मैं।।

—सरला गौड़, सचिव, आर्य समाज,
सुन्दरनगर (खरीहड़ी)

ओ३म्

'आर्य समाज'- इतना तो हर कोई जाने''

♦रेखा ठाकुर, जोगिन्द्रनगर (हि० प्र०)

ओ३म् भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

भावार्थ : उस प्राणस्वरूप, दुखनाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

मुनष्य एक मननशील प्राणी है। इसलिए मनुष्य के जीवन में विपत्तियाँ, कठिनाइयाँ, विपरीत परिस्थितियाँ, हानियाँ और कष्ट की घड़ियाँ आती रहती हैं। जैसे काल–चक्र के दो पहलू–रात और दिन है, वैसे ही सम्पदा और विपदा, सुख और दुख भी जीवन रथ के दो पहिए हैं। दोनों के लिए ही मनुष्य को हर समय तैयार रहना चाहिए। निराशा, चिन्ता, भय और घबराहट उत्पन्न करने वाली स्थिति पर भी मनुष्य को अपने मस्तिष्क का सन्तुलन नहीं खोना चाहिए। धैर्य को स्थिर रखते हुए सजगता, बुद्धिमत्ता, शान्ति और दूरदर्शिता के साथ कठिनाइयों को मिटाने का प्रयत्न करना चाहिए।

ऐसी स्थितियों की समझ रखते हुए महान् समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी सामने आए:–

आर्य समाज की स्थापना :

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। आर्य समाज की स्थापना १८७५ ई. में हुई। स्वामी दयानन्द सरस्वती बड़े वीर तथा सौम्य पुरुष थे। एक बार बचपन में इन्होंने एक चूहे को शिवलिंग पर चढ़ते देखा। यह देखकर उनका मूर्ति पूजा से विश्वास उठ गया। इस घटना से उनका मन संसार से उठ गया। २२ वर्ष की आयु में इन्होंने घर छोड़ दिया और लगातार १५ वर्षों तक सत्य की खोज में भटकते रहे। अन्त में वे मथुरा में स्वामी विरजानन्द के शिष्य बन गए। ३ वर्षों तक शिक्षा प्राप्त करने बाद वे धर्म प्रचार के लिए निकल पड़े। जिससे मानव जाति का कल्याण हो।

महर्षि के अनुसार व्यक्ति वह है जो सत्य बोलने की शक्ति रखता हो, जिसमें प्रेम और मानवता का भाव हो, न्याय, दया, उदारता इत्यादि गुण हो।

आर्य समाज का उद्देश्य संसार का उपकार करना है, सबकी उन्नति के लिए प्रयत्न करना। उसके लिए अविद्या का नाश करना आवश्यक है।

जनता, स्वामी दयानन्द जी के विचारों से बहुत प्रभावित हुई। जब वे बोलते थे तो हज़ारों की संख्या में लोग इक्ट्ठे हो जाते तथा उनके शिष्य बन जाते। उन्होंने लोगों को शिक्षित किया। उनकी शिक्षाऐं इस प्रकार से हैं:–

शिक्षाएं :

१. ईश्वर एक है। वह सर्वव्यापी तथा शक्तिमान है। वह निराकार है। अतः मूर्ति बनाकर उपासना करना व्यर्थ है।
२. वेद सत्य हैं। ये ईश्वरीय वाणी है। यही हमें जन्म–मरण के चक्र से मुक्ति दिला सकते हैं।
३. ज्ञान के प्रकाश से अन्धकार का नाश करना चाहिए।
४. शुद्धि द्वारा प्रत्येक धर्म का अनुयायी हिन्दू बन सकता है।
५. आर्य सभ्यता विश्व की सभी सभ्यताओं से महान् है।
६. आर्य समाज ने सती–प्रथा का खण्ड़न किया।
७. ज्ञान को धर्म के लिए प्रयोग में लाना चाहिए।
८. उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।
९. बाल–विवाह अभिशाप है। क्योंकि यह मनुष्य को निर्बल बना देता है।
१०. ईश्वर जीव और प्रकृति न कभी पैदा होती है नहीं नष्ट।

यह भावना बच्चों में छोटी आयु से भरनी चाहिए। वेदों का ज्ञान भी बच्चों को देना चाहिए। क्योंकि वेद में किसी व्यक्ति, स्थान या काल का वर्णन नहीं है। वेदों का ज्ञान प्रकृति के नियमों के अनुकूल है। ये वेद चार हैं

१) ऋग्वेद में लगभग १०५८६ मंत्र हैं जो ईश्वरीय ज्ञान देते हैं।
२) यजुर्वेद में १६७५ मंत्र हैं जो कर्म और यज्ञों की विधि से सम्बन्धित हैं।
३) सामवेद में १८७५ मंत्र प्रार्थना और उपासना गति के रूप में हैं।
४) अर्थववेद में ५४७७ मंत्र हैं जिनमें विज्ञान और अध्यात्म की बातें कही गई हैं।

इन वेदों के पढ़ने–पढ़ाने से सत्य का प्रकाश होगा और सब प्राणी सुख–शांति से रह सकेगें। क्योंकि वैदिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के मेल से देश की उन्नति होगी और समाज का कल्याण होगा।

'धनमेव चरित्रं'

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

पैसा भगवान तो नहीं किन्तु भगवान से कम भी नहीं। लक्ष्मी का वाहन है उल्लू, धनवान व्यक्ति आवश्यकता से अधिक धन पा कर मद में अन्धा हो जाता है।

'कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय,
यह खाय वौरात है वह पाए वौराये।'

धतूरे को खाने से मनुष्य मदहोश होता है किन्तु धन को प्राप्त कर लेने मात्र से नशायुक्त हो जाता है। यदि मनुष्य के पास धन का महान् संग्रह हो जाय तो यह उस के लिए अनर्थ का कारण बन जाता है। यहाँ यह कहावत चरितार्थ होती है–'टका करे टकटकात, रूपया करे उल्कापात।' धन को संभालना और उस का सदुपयोग करना भी एक कला है जो विवेकशील व्यक्ति के पास ही होती है। अनाड़ी व्यक्ति यदि धनवान बन जाय तो वह कल्याण मार्ग से भ्रष्ट हो जाता है। माया मोह में डालने वाली होती है, मोह नरक में गिराता है। इस सन्दर्भ में महर्षि कश्यप ने कहा है–'कल्याण चाहने वाला व्यक्ति अधिक धन का संग्रह न करे। महर्षि विश्वामित्र ने धन के अधिक संग्रह के सम्बन्ध में–'जैसे बारहसिंगे के सींग शरीर बढ़ने के साथ बढ़ते हैं वैसे ही धनवृद्धि के साथ–साथ तृष्णा बढ़ती जाती है और तृष्णा की कोई सीमा नहीं।' मनुष्य का शरीर वृद्धावस्था में जर्जर हो जाता है। शरीर के अंग शिथिल पड़ जाते हैं, बाल सफेद हो जाते हैं, दन्तहीन मुख पोपला हो जाता है, आंखों की नज़र कमजोर हो जाती है, सहारे के लिए हाथ में पकड़ी हुई लाठी भी कांपती है किन्तु 'तृष्णैका तरूणायते' और भी 'तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा'। हम ही तृष्णा की पूर्ति करते–करते एक दिन काल के गाल में चले जाते हैं। यह तृष्णा मनुष्य को नराधम और नरपिशाच बना देती है। धन कमाने की लालसा में मानव भले–बुरे, कर्म–अकर्म, धर्म–अधर्म का कोई विचार नहीं करता। धन कमाने के लिए मनुष्य कैसे–कैसे स्वांग नहीं रचता। आये दिन समाचार–पत्रों में भ्रष्टाचार के नये–नये महाघोटालों के भण्डे फूट रहे हैं। आज का लखपति करोड़पति बनना चाहता है, करोड़पति अरबपति और अरबपति तो पूरे ब्रह्माण्ड पर ही अपना अधिपत्य जमाना चाहता है : ऐसे लोभी व्यक्तियों को यह बात भी याद रखनी चाहिए :–

इक्ट्ठे कर लो चाहे जितने हीरे मोती।
पर एक बात याद रखना, कफ़न में जेब नही होती।।

फिर भी धन की चाह निरन्तर बढ़ती ही जाती है। आज सार्वजनिक जीवन में खोटे सिक्कों का चलन इतना अधिक हो गया है कि अब अच्छे सिक्के यदि कहीं दिखाई भी देते हैं तो नकली मालूम पड़ते है। आज जो जितना अधिक भ्रष्ट और अपराधिक प्रवृति का व्यक्ति होगा वह उतना ही प्रतिष्ठित नेता होगा वर्तमान युग में इस का परिणाम देखिये–

'छोटे छोटे चोरों को तो सूली पर टांग देते हैं,
और बड़ो बड़ों को सार्वजनिक पदों पर बिठाते हैं।'

ऐसी स्थिति में गरीबी दूर करने का जो ढ़िंढ़ोरा पीटा जाता है वह मात्र नारा बन कर रह जाता है। गरीब–अमीर की खाई को पाटने के लिए 'गरीबी हटाओ' आन्दोलन को मुंह चिढ़ाने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। कैसा भद्दा मजाक है–

रजे हुओं को खूब रजाती है ये दुनियाँ
भूखों से नज़र चुराती है ये दुनियाँ
यहाँ गरीब तरसता है दाने–दाने को,
कुत्तों को बिस्किट खिलाती है ये दुनियाँ।
अब पड़ गया पर्दा सभी कामों पर,
नोटों से दोष छुपाती है ये दुनियाँ।'

नीति के अनुसार मनुष्य के लिए चरित्र ही धन है, वही उस का साध्य है इसलिए उस की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो जीवन यापन का साधन मात्र है, इसलिए उस के पीछे भागना ठीक नहीं। धनहानि से मनुष्य की कोई बड़ी हानि नहीं होती किन्तु चरित्र की हानि पर उसका सब कुछ चला जाता है। अंग्रेज विचारकों ने भी धन हानि को हानि नहीं माना है। 'If wealth is lost, nothing is lost' जबकि चरित्र नाश को उन्होंने सर्वनाश की संज्ञा दी है। 'If character is lost, everything is lost' किन्तु विज्ञान के रथ पर सवार होकर मानव सभ्यता ज्यों–ज्यों आगे बढ़ती है मानव जीवन से अध्यात्म, नीति और जीवनमूल्य पीछे छूटते जा रहे हैं। हमारा चिन्तन और जीवन दर्शन परमात्मा की सत्ता को नकार कर शरीर और उस की सुख सुविधाओं पर केन्द्रित होता जा रहा है। इस प्रकार धन रक्षणीय हो गया है और चरित्र उपेक्षणीय और तब उक्त स्लोगन उलट कर इस तरह हो गया है :

'If character is lost, nothing is lost,
If weath is lost, everything is lost.

मानव जीवन और सामाजिक विकास का प्रमुख आधार होने से वित्त के महत्व को सदैव स्वीकारा गया है। राज्य का परित्याग कर के संन्यासी बन जाने वाले भर्तृहरि ने

भी धन की समाज में सर्वोपरि प्रतिष्ठा को स्वीकार करते हुए लिखा है :

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पंडितः
स श्रुतवान गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीय सर्वेगुणा
कांचनमाश्रयन्ति।

धनवान व्यक्ति निम्न कुल का होने पर भी उच्च कुल का माना जाता है, चाहे निरा मूर्ख हो किन्तु विद्वान माना जाता है। उसी की बातें सुनने योग्य होती हैं चाहे उन में कोई सार न हो, धनवान अवगुणी होने पर भी गुणवान माना जाता है। वही अच्छा वक्ता भी होता है चाहे वह असंसदीय भाषा की ही प्रयोग क्यों न करता हो। कुरूप होते हुए भी वह देखने योग्य होता है। सच है सभी गुण धन सम्पति में आश्रित हैं।

व्यक्ति में जब तक धन कमाने की शक्ति रहती है तभी तक परिवार उस से प्रेम करता है किन्तु जब वह बूढ़ा हो कर धनोपार्जन के योग्य नहीं रहता तो घर में उसे कोई नहीं पूछता। धनसंग्रह की होड़ मनुष्य को चरित्र भ्रष्ट बना देती है। धन नश्वर है, उस से पुष्ट होने वाला शरीर भी नश्वर है जब कि चरित्र अमर है चरित्र से निर्मित यश भी अमर है। तभी संत कबीर कहते हैं–

'कबीरा सो धन सांचिए जो आगे कूं होइ।
सीस चढ़ाये पोटली, ले जात न देख्या कोइ।।'

मनुष्य को अपने जीवन में ऐसे धन का संग्रह करना चाहिए जो परलोक गमन के समय उस के साथ जा सके। कबीर जी कहते हैं कि सिर पर धन की पोटली ले जाते आज तक किसी को भी नहीं देखा।

कृष्ण चन्द आर्य अस्वस्थ

प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान एवं आर्य वन्दना के सम्पादक श्री कृष्ण चन्द आर्य जी गत सप्ताह से अस्वस्थ हो गये हैं। उनका शिमला में आप्रेशन हुआ है। चिकित्सकों ने उन्हें विश्राम करने का परामर्श दिया है। अतः वे आजकल अपने गृह में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सत्यप्रकाश मेंहन्दीरत्ता, महामन्त्री श्री सत्यपाल भटनागर तथा आर्य वन्दना परिवार ने प्रभु से उनके शीघ्र स्वस्थ होने तथा उत्तम स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु होने की कामना की है। प्रधान श्री मेहन्दीरत्ता जी ने दूरभाष पर उन का कुशल क्षेम पूछा तथा शीघ्र स्वस्थ होने की शुभकामना दी।

–मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

धर्म एक है।

धर्म एक है। हमारे सभी समुदायों वर्गों, जातियों और उप जातियों के पूर्वज एक ही वैदिक धर्म के उपासक, प्रचारक रक्षक थे। वे एकेश्वर थे। मन, वचन और कर्म से प्राणी मात्र के हित चिन्तक थे। हमारे पूर्वज सभी को एक समान समझते थे। निराकार ईश्वर के पूजक और उपासक थे। हमारे पूर्वज कण–कण में ईश्वर की उपस्थिति मानते थे। वे जानते थे कि हमारे हर व्यवहार को अच्छे और बुरे कर्मों को वह परम सत्ता देख रही है। अतः वे मानते थे कि आदमी को अच्छे और बुरे कर्मों का फल अवश्यमेव ही भोगना पड़ता है। वे कर्मवादी थे। भाग्यवादी नहीं थे। ईश्वर ने जब हाथ दिये हैं तो कर्म अवश्यमेव करते रहना चाहिये। सुकृत्यों के बीज बोने चाहिये। परोपकार के कर्म करने चाहिये। वे अपने लिये नहीं जीते थे। वे स्वार्थ वश, लोभ, मोह की मदिरापान नहीं करते थे। अपने हिमालय पर्वत जैसे दुःख को देखकर वे भयभीत नहीं होते थे। दूसरों के दुःख को देखकर विचलित हो जाते थे। वे दूसरों के आंखुओं को पोंछना ही अपना सबसे बड़ा धर्म मानते थे। वे कल्पना के पंख लगाकर बुरे–बुरे कार्य करके संसार का त्याग नहीं करते थे। उनके दर्शनों से मन के सभी ताप और सन्ताप दूर हो जाते थे। हमारे पूर्वजों का जीवन अनुपम और अनुकरणीय था। हमारे पूर्वज अपने लिये दूसरों के हित का हनन नहीं करते थे जीवन भर अच्छा कार्य करते थे। सुख–शान्ति से रहते थे। हंसते–हंसते प्रभु चरणों में शरीर रूपी इस फटे पुराने चोले को छोड़ जाते थे। वे मोह और लोभ से ऊपर उठे हुये थे। सारे संसार में वे भ्रातृ भावना का प्रचार और प्रसार करते थे। तभी यह देश भारत संसार का शिरोमणि था। यहाँ मर्यादा पुरूषोतम श्री राम जैसे युग पुरूष, श्री कृष्ण जैसे योगी और कर्ण जैसे दानी हुये जिन्होंने इतिहास के पन्नों में सदा और सर्वदा के लिये अपनी छाप छोड़ कर अपना नाम अमर कर दिया। हमारे पूर्वज समाज सेवा को अपना सबसे बड़ा धर्म और कर्म मानते थे। –सम्पादक

।। ओ३म् ।।

ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी चाहिए। जिससे सुख प्राप्त होगा ही, कष्ट आवेंगे ही नहीं।

–स्वामी दयानन्द

शोक समाचार

•जिला हमीरपुर तहसील नादौन के जसोह गांव के ४१ वर्षीय यशवीर सिंह आज इस दुनियाँ में नहीं रहे। यशवीर सिंह का २० जून २०१३, वीरवार रात्रि को निधन हो गया है। इस दुखद समाचार को सुन कर आस–पास के लोग अपने घरों को छोड़ घटना स्थल पर पहुंचे। २० तारीख से लेकर २६ तारीख तक लोगों का आना–जाना लगा रहा, वह बहुत दयालु, ईमानदार, सबसे मैत्री भाव रखते थे। किसी से वैर भाव नहीं किया करते थे। यशवीर सिंह डी. ए. वी. स्कूल हमीरपुर में सहायक के रूप में कार्य करते थे। इस दुखद समाचार को सुन कर डी. ए. वी. के प्रिन्सीपल श्री पी. सी. वर्मा जी दिवंगत आत्मा की शान्ति और परिवार का मनोबल बढ़ाने के लिए उन के घर पहुंचे। यशवीर सिंह की अन्त्येष्ठि पूरे वैदिक ढ़ंग से सम्पन्न हुई। यशवीर सिंह अपनी धर्म पत्नी एक बेटे अतुल कश्यप को पीछे छोड़ गये हैं। यशवीर सिंह के माता–पिता और दो भाई हैं। इन के पिता जी की आयु ७६ साल है और माता जी की आयु ७० साल है। गौरव की बात यह है कि यह परिवार गत ८० सालों से वैदिक प्रचार करता आ रहा है। इन के पिता श्री उत्तम चन्द जी का कहना है कि मेरे स्वर्गीय पिता राम सिंह भी आर्य समाजी थे। उत्तम चन्द जी आर्मी से रिटायर हैं। बहुत कर्मठ आर्य हैं। वे अपने आस–पास के गांव में काफी समय से बाहर से प्रचारक बुलाकर वेद प्रचार करते आये हैं और खुद भी बिना कुछ लिए हवन करवाते हैं। यशवीर सिंह के इलावा इन के बेटे परमवीर सिंह और दूसरा युद्ध वीर सिंह हैं। श्री परमवीर सिंह गुरूकुल से निकला है और आजकल डी. ए. वी. स्कूल हमीरपुर में शास्त्री के पद पर कार्यरत्त है। शास्त्री परमवीर सिंह विद्वानों में से एक पहुंचे हुए विद्वान् हैं। हवन–यज्ञ गांव की बस्तियों में, आर्य समाजों में, डी. ए. वी. स्कूलों में बराबर करते रहते हैं। इस के साथ–साथ यह वैदिक उपदेशक भी हैं, जब तर्क के माध्यम से उपदेश करते हैं तो सुनने वाले आनन्दित हो जाते हैं। दूसरा बेटा युद्ध वीर सिंह जो होमगार्ड की नौकरी करता है। आर्य समाज हमीरपुर में इस दुःखद समाचार को सुन कर आर्य समाज में हवन यज्ञ के साथ–साथ दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

•श्री ईश्वरदास सुपुत्र ठाकुर रामशरण, आयु ७२ साल गांव ककड़ियार डा. हमीरपुर के निवासी थे। जो जनेडघाट (चैल) शिमला में रहते थे इनका ३० मई २०१३ को स्वर्गवास हो गया है। यह श्री ज्ञानचन्द आर्य के सगे भाई थे। यह बड़े ईमानदार सत्यनिष्ठ आर्य विचारों से ओत–प्रोत थे। इनकी आत्मिक शान्ति के लिए आर्य समाज हमीरपुर में हवन के उपरान्त दो मिनट का मौन रखा।

–वीरी सिंह, भजनोपदेशक

संघ बैठक

•हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ खण्ड सुन्दरनगर की मासिक बैठक २८ जून २०१३ को प्रधान श्री मोहन सिंह के अध्यक्षता में जवाहर पार्क सुन्दरनगर में आयोजित की। इस बैठक में जिला प्रधान श्री के. सी. आर्य, महामन्त्री श्री भगत राम आजाद, सुन्दरनगर नगर परिषद की अध्यक्ष एवं संघ की पूर्व उपाध्यक्ष श्रीमति गिरिजा गौतम भी उपस्थित हुई। सर्वप्रथम उत्तराखंड में हुई जन हानि पर शोक व्यक्त करने हेतु दिवंगत आत्माओं की शांति और सद्गति के लिए दो मिनट का मौन रखा। प्रदेश स्तरीय चुनाव के स्थगित होने के कारणों पर श्री भगत राम जी ने विस्तृत जानकारी बैठक में दी तथा जुलाई के मध्य में चुनाव करवाने के लिए श्री मंगल सिंह कंवर को सुझाव स्वरूप पत्र लिखा। श्री के. सी. आर्य जी ने सदन को सम्बोधित करते हुए पैंशनर को एक जुट रहकर संघ को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि पैंशनर किसी प्रकार के दुष्प्रचार से भ्रमित न हों। शीघ्र ही प्रदेश स्तरीय चुनाव होंगे तथा मांगों को मनवाने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ किये जाऐंगे। इस बैठक में प्रधान एवं सचिव के अतिरिक्त सर्व श्री पोहलो राम, दिलाराम शर्मा, श्रीमति गायत्री देवी, श्रीमति निर्मला शर्मा, लक्षमण सिंह, देवीराम, कलिया राम, मायाराम, रमण कुमार गुप्ता, बालकराम, लक्षमण सिंह, पूर्व कोषाध्यक्ष उत्तम चन्द वर्मा भी उपस्थित हुए। –सचिव

बधाई समाचार

हिमाचल पैंशनर्ज कल्याण संघ जिला मण्डी के प्रधान कृष्ण चन्द आर्य तथा आर्य वन्दना परिवार की ओर से रानी प्रतिभा सिंह के लोक सभा चुनाव में भारी मतों से विजय पर उन्हें हार्दिक बधाई दी है। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि श्रीमती प्रतिभा सिंह और मुख्यमन्त्री राजा वीरभद्र सिंह के मार्ग दर्शन में प्रदेश का सर्वांगीण विकास होगा। –सम्पादक

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती नामचरित

•अमित ठाकुर, आर्य पब्लिक हाई स्कूल, चम्बा

म-मन को दिव्यता के भाव से ईश्वर को समर्पित करने वाले।
ह-हर मानव को सद्ज्ञान सिखा सत्य पथ पर चलाने वाले।।
र-रवि सम प्रकाश पुंज वेदों का आलोक धरा पर फैलाने वाले।
षि-सिखा शिष्टाचार, लिखा सत्यार्थ प्रकाश अन्धविश्वास मिटाने वाले।।

स-सतसंग, संयम, सेवा, साधना, आराधना का पाठ पढ़ाने वाले।
वा-वासनाओं का त्याग करा विषयों से आसक्ति छुड़ाने वाले।।
मी-मीत भाव को जगा शुद्ध आहार व्यवहार का सार बताने वाले।
द-दया करो हर प्राणी पर दशों दिशाओं इन्द्रियों को संयमित कर सदाचार फैलाने वाले।
या-याद करो नित ओ३म् नाम को बाकी सब झूठ पसारा बताने वाले।
न-नर तन से कर जग भलाई तब होगा मन ईश अनुरूप हवाले।।
नू-नम्र निर्मल निश्चल बुद्धि से प्रभु को भज अपने को कर यज्ञ कर्म हवाले।
द-दशों दिशा में वेद ध्वनि गुंजा ऋषियों की संस्कृति कायम कराने वाले।।

स-संत सूर दानी की भूमिका निभा युग परिवर्तन करने वाले।
र-रग-रग में राष्ट्र भक्ति का भाव जगा भारत मां श्रृंगार कराने वाले।।
सु-सबका हो कल्याण, युवा पीढ़ी का हो कल्याण आर्य समाज बनाने वाले।
व-वंश, कुटुम्ब, परिवार, समाज और राष्ट्रहित सरल दस नियम बनाने वाले।।
ती-तीन पापों से छुटकारा हेतु सबको वैदिक मार्ग दिखाने वाले।
जी-जीवन धन्य हुआ आपका हिन्द को विश्व का सरताज बनाने वाले।।

आपकी पवित्र आत्मा को ओ३म् शान्ति के साथ कोटि–कोटि प्रणाम। भारत भूमि पर आप जैसी दिव्य आत्मा का सदा रहे मुकाम।।

प्रेरणा स्तम्भ

जब कभी आर्य समाज कुल्लू का ध्यान मन में आता है तो इस समाज के प्रधान श्री अशोक की ओर स्वतः ही चला आता है। वे अपनी आंखों की ज्योति खो चुकने के उपरान्त भी रात–दिन जहाँ व्यापार में अपने परिवार का साथ देते हैं वहाँ दूसरी ओर आर्य समाज के कार्य कलापों में भी बढ़चढ़ कर भाग लेते रहते हैं। विपरीत परिस्थितियों में भी वे सदा मुस्कुराते रहते हैं। अपने कार्य में वे उत्साह पूर्वक आगे बढ़कर बड़ी से बड़ी चुनौती का भी सहर्ष मुकाबला करते रहते हैं। उनकी धर्म पत्नी जी तथा उनके सुपुत्र उनकी भरपूर देख रेख करते हैं। हमारे लिये भी अशोक आनन्द "अशोक महान्" और प्रेरणा स्तम्भ हैं। प्रभु इनको सपरिवार शतायु दे ताकि यह परिवार कर्त्तव्य पथ पर निष्ठापूर्वक आगे बढ़ता रहे।

–सम्पादक

दादी माँ की याद में

दादी माँ ! दादी माँ !
सबकी आंखों का तारा दादी माँ,
तू घर की शान थी,
आन, मान, अभिमान थी।
तुमने सच्ची राह पर चलना सिखाया,
सबको अपना बनाना सिखलाया।
सच्चाई–ईमानदारी का तुम्हारा गहना,
निन्दा–बुराई से कोसों दूर रहना।
तुमसे सुन्दर लगता था,
हमें यह जमाना,
वृन्दावन लगता था, घर आंगन सुहाना।
दया, तपस्या त्याग की मूर्त थीं तुम,
पीपल बरगद नीम की छावं थीं तुम।
जीवन की बरसात में,
कर्मठ राह पर चली तुम,
गीता, कुरान, गुरू ग्रंथ शब्द ज्ञान थीं तुम।
मधुर भजनों की वर्षा करती तुम,
सबके मन को हर्षाती तुम
जीवन एक संघर्ष है,
दिए तुने संदेश।
हमें छोड़ चली गई,
अब यादें हैं शेष।
दादी माँ, दादी माँ।
सबकी प्यारी दादी माँ।

–रमा शर्मा

समाचार

प्राईम प्रिटिंग प्रैस के संचालक श्री तरूण कुमार जी जो आर्य वन्दना के मुख्य प्रबन्ध सम्पादक तथा लेखक श्री विनोद स्वरूप के सुपुत्र हैं शारीरिक अस्वस्थता के कारण उन्हें चण्डीगढ़ आप्रेशन कराने हेतु जाना पड़ा। उनका आप्रेशन सफल रहा। अब तरूण जी पूर्ववत अपने कार्य में व्यस्त हो गये हैं। आर्य वन्दना के इस मास के अंक को अपने बिगड़ते स्वास्थ्य की चिन्ता किये बिना उन्होंने पाठकों तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है। आर्य वन्दना परिवार श्री तरूण जी के दीर्घ और स्वस्थ जीवन की कामना करता है।

–सम्पादक

ऋग्वेद यजुर्वेद

स्वामी सर्वानन्द

महर्षि दयानन्द

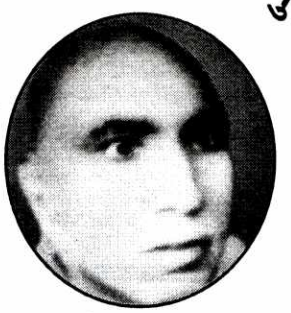

स्वामी स्वतन्त्रानन्द

आर्यों के तीर्थ

दयानन्द मठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब) को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्टूबर, 2013

को बड़ी धूम–धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा।

जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती

सामवेद अथर्ववेद

अध्यक्ष दयानन्द मठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क : 01875–220110, 094782–56272, 94172–20110

इस पत्रिका हेतु अपने ईष्ट मित्रों और शुभचिन्तकों को भी सदस्य बनायें। प्रदेश की आर्य समाजों और आप के पावन सहयोग से ही आर्य वन्दना का अंक हर मास प्रकाशित हो रहा है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ` 100, द्विवार्षिक शुल्क : ` 160, त्रैवार्षिक शुल्क : 200

१. आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुन्दरनगर, (खरीहड़ी) (हि० प्र०)

२. उप–कार्यालय, हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, मण्डी (हि. प्र.)

आप अपने लेख निम्न पते पर ई–मेल द्वारा भी भेज सकते हैं : arya.bandana@gmail.com

वैचारिक क्रांति के लिए महर्षि दयानन्द की अमर रचना सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ें।

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

उपदेशक मण्डल को विदाई देते हुये प्रधान एवं कोषाध्यक्ष

स्वामी सदानन्द जी महाराज उपदेश करते हुये पास बैठे श्री राम फल सिंह जी

उत्सव समापन पर बायें से दायें प्रधान जी के साथ सर्व श्री मन्सा राम चौहान कोषाध्यक्ष, अशोक कुमार आनन्द प्रधान, स्वामी सदानन्द महाराज, अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर, रामफल यज्ञ के ब्रह्मा एवं सत्यपाल भटनागर सभा महामन्त्री।

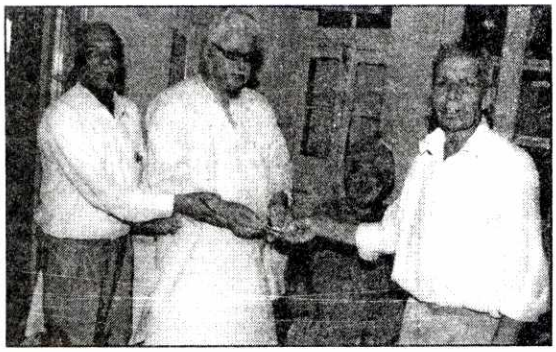

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश को प्रचार हेतु ₹ २००० की राशि सभा महामन्त्री को शौंपते हुये प्रधान आर्य समाज कुल्लू

ऋषि लंगर की एक झलक श्री गिरजा शर्मा मन्त्री आर्य समाज, विद्यालय के विद्यार्थी तथा अध्यापिका सेवा कार्य करते हुए।

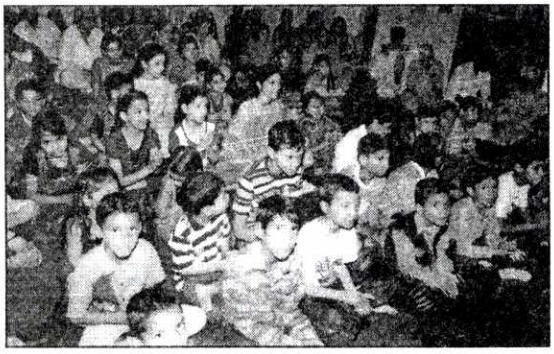

उपदेश का आनन्द लेते हुये श्रोतागण